मैवात शहर के मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन

श्रीमती नजमा चौधरी
सहायक व्याख्याता
राव मोहर महाविद्यालय, गुडगॉव

प्रस्तुत अनुसंधान में मैवात शहर के मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया गया जिसका उद्देश्य मैवात शहर के मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना था जिसकी परिकल्पना मेवात के मुस्लिम एंव गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यवसायिक अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, थी। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया न्यादर्श के लिए मैवात शहर के शासकीय एंव अशासकीय महाविद्यालयों से 500 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक विधि से चुना गया। निष्कर्ष में मेवात के मुस्लिम एंव गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं। क्योंकि व्यवसायिक अभिवृत्ति रूचि पर आधारित होती हैं न कि जाति के आधार पर क्योंकि रूचि का संबंध व्यक्ति के व्यक्तित्व से होता है न कि जाति से।

मुख्य विन्दु– अभिवृति, शिक्षक प्रशिक्षणार्थी

शिक्षा मनुष्य की नैसर्गिक चेष्टा और उसकी विकासशील प्रवृत्ति है। मनुष्य आदिकाल से सीखता आ रहा है। जो कुछ उसने सीखा, उसे शिक्षा का रुप दिया। शिक्षा मानव समाज की संचित सीख है। वह उसे परंपरा और परिस्थितियों के अनुसार ग्रहण करता है। शिक्षा कोई ऐसी वस्तु नही, जो किसी पदार्थ या बीज के रुप में प्रदान की जाये। यह तो एक प्रकार की चेतना है, जिसे मनुष्य स्वयं प्राप्त करता है। किसी वस्तु के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल मनोभाव को अभिवृत्ति कहते हैं परन्तु मनोवैज्ञानिक अर्थ इस साधारण अर्थ से कहीं अधिक निश्चित है। एडवर्ड 1957 के अनुसार– एक व्यक्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु की ओर धनात्मक प्रभाव दर्शाता है तो कहा जाता है, कि उस वस्तु के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति है यदि वह ऋणात्मक प्रभाव दर्शाता है अभिवृत्ति प्रतिकूल मानी जायेगी। व्यवसायिक अभिवृत्ति जन्मजात नहीं अपितु सीखी जाती है। व्यवसायिक

अभिवृत्ति का निश्चित अस्तित्व नहीं है अनुभव के आधार पर हम उनमें परिवर्तन या सुधार ला सकते हैं। व्यवसायिक अभिवृत्ति व्यक्ति और वस्तु के संबंध को सूचित करती है क्योंकि अभिवृत्ति किसी एक विशिष्ट सीमंत उद्दीपक के संबंध है। एक व्यक्ति विशेष में या तो एक उद्दीपक के प्रति अभिवृत्ति पाई जायेगी या फिर उसमें कई उद्दीपकों के प्रति अभिवृत्ति पाई जायेगी। व्यवसायिक अभिवृत्ति में अभिप्रेरक प्रभावी गुण पाये जाते हैं। अभिवृत्तियां विद्यालय, महाविद्यालयों में होने वाले अनुभवों में बदलती रहती है। **जगदीश (2009)** ने माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसके उद्देश्य थे माध्यमिक शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय को जानना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को जानना एंव सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में महिला एवं पुरूष शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को जानना व निजी माध्यमिक विद्यालयों में महिला एवं पुरूष शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को जानना जिसकी निम्न परिकल्पनाऐं थी सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की महिला व पुरूष शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था निजी माध्यमिक विद्यालयों की महिला व पुरूष शिक्षकों को व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता व न्यादर्श के लिये 100 माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों को चुना व उपकरण उमेश कुलसुम द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति मापनी को चुना और यह निष्कर्ष पाया कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है एंव सरकारी माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में उनके व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है व निजी माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। सामान्य पुरूष एवं महिलाओं ने उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। **जार्ज (2009)** ने शिक्षकों की संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति पर शोध किया जिसके उद्देश्य शिक्षकों की संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर को जानना व सहायता प्राप्त विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों में संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर जानना एंव बिना सहायता प्राप्त विद्यालयों एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों में संचार सीखने के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर को जानना व बिना सहायता प्राप्त विद्यालय एवं सरकारी विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों में संचार से सीखने

के प्रति अभिवृत्ति के अन्तर को जानना एंव पांच वर्ष का अनुभव व इससे ज्यादा अनुभवी शिक्षकों को संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति को जानना इसकी परिकल्पना निम्न थी महिला एवं पुरूष शिक्षकों में संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। सहायता प्राप्त विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों में संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है व बिना सहायता प्राप्त विद्यालयों एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों में संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। इसके लिये न्यादर्श 100 सेकेन्ड्री एवं 100 सीनियर सेकेण्डरी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को चुना व उपकरण स्वयं निर्मित प्रश्नावली जो तीन मापनी की थी व यह निष्कर्ष रहा कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों में संचार से सीखन के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई व सरकारी एवं बिना सहायता प्राप्त विद्यालयों में संचार से सीखने के प्रति अनुकूलन अभिवृत्ति पाई गई।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है

न्यादर्श न्यादर्श के लिए मैवात शहर के मुस्लिम एंव गैर मुस्लिम 500 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक विधि से चुना गया।

- प्रस्तुत शोधकार्य में जाति एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति आदि चरों का प्रयोग किया गया

शोध उपकरण

उमाकुलसुम व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी – प्रस्तुत शोध कार्य में व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी के लिए उमाकुलसुम (1994) द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है जिसमें व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी से संबंधित विभिन्न आयामों जैसे अकादमिक, प्रशासनिक, समाजिक व मनोवैज्ञानिक, सहपाठ गामी क्रियायें एंव आर्थिक से संबंधित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के लिए चार बिन्दु दिए गए है जिसमें प्रत्येक उत्तर पर अलग–अलग अंक प्रदान किए जाएगें। धनात्मक कथनों को वरीयता के आधार पर 4, 3, 2, 1, अंक दिये जायेगें एंव नकारात्मक प्रश्नों को वरीयता के आधार पर 1, 2, 3, 4, अंक दिये जायेगें कुल प्राप्तांक शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति को दर्शातें है। प्रस्तुत व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता 0.812 एवं वैधता 0.92 है।

सांख्यिकीय प्रविधियॉ –

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं t परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों कर प्रयोग किया गया।

परिकल्पना

''मेवात के मुस्लिम एंव गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यवसायिक अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।''

तालिका क्र.1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	टी– परीक्षण	सार्थकता (.05स्तर)
मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	250	125.32	5.88	.51	1.92	सार्थक अन्तर नहीं
गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	250	126.3	5.70			

व्याख्या – उपरोक्त तालिका क्र. 1 से स्पष्ट है, कि मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यवसायिक अभिवृति का मध्यमान क्रमशः 125.32 एवं 126.3 है। तालिका से स्पष्ट है, कि परिकलित टी परीक्षण का मान 1.92 है जबकि कि्रत 498 के लिए .05 सार्थकता पर टी–परीक्षण का सारणीमान 1.96 है अतः परिकलित मान, सारणीमान से कम है अर्थात् 1.92 ढ1.96 इस प्रकार मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यवसायिक अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

इस प्रकार परिकल्पना सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

आरेख क्र. 1.1

''मेवात के मुस्लिम एंव गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवसायिक अभिवृति के प्राप्त मध्यमानों का आरेखीय प्रस्तुतीकरण''

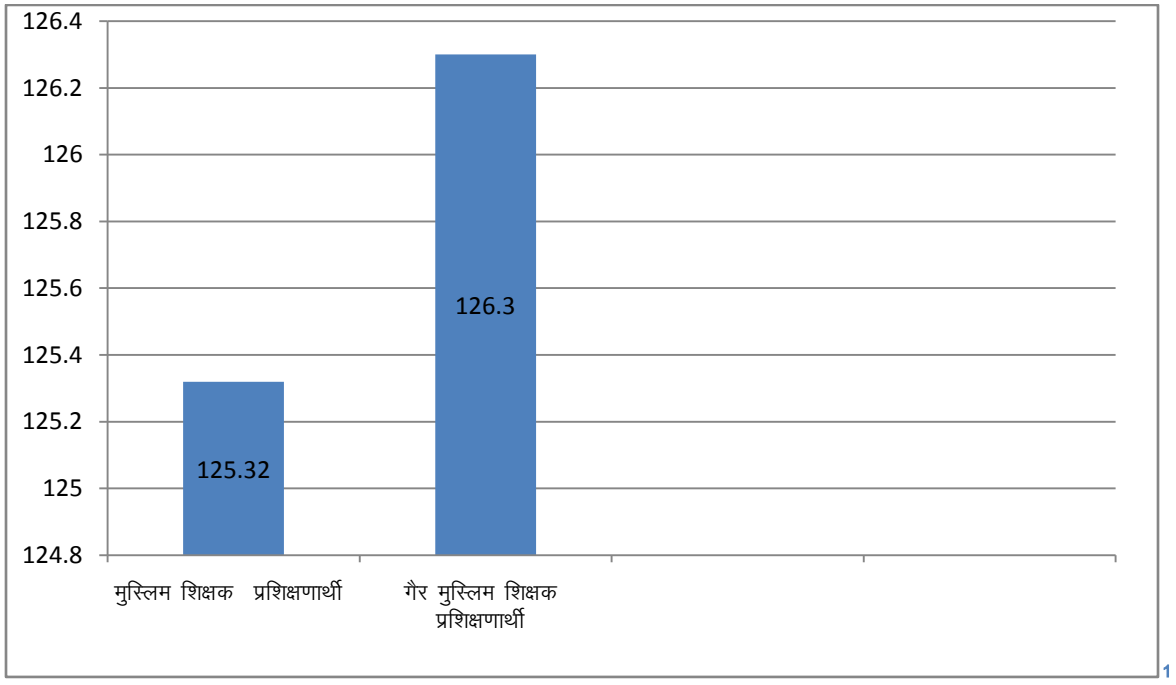

व्याख्या – आरेख क्र. 4.2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यवसायिक अभिवृति का मध्यमान क्रमशः 125. 32 एवं 126.3 है इस प्रकार मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एवं गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की व्यवसायिक अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं होता ळें

निष्कर्ष–

मेवात के मुस्लिम एंव गैर मुस्लिम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं। क्योंकि व्यवसायिक अभिवृत्ति रूचि पर आधारित होती हैं न कि जाति के आधार पर क्योंकि रूचि का संबंध ब्यक्ति के ब्यक्तित्व से होता है न कि जाति से। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण कार्य में आने से पहले व्यावसायिक अभिवृति परीक्षण करना चाहिए उसकी शिक्षण व्यावसाय में रूचि होने पर ही शिक्षक प्रशिक्षण में आए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अवसाना (2011), विश्वविद्यालयी शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पिरीआडिक रिसर्च

जार्ज (2009), शिक्षकों की संचार से सीखने के प्रति अभिवृत्ति, अप्रकाशित शोध, नागपुर विश्वविद्यालय।

जगदीश (2009), माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन इन्डियन एजूकेशनल एवस्ट्रेक्ट

शर्मा. ए. के. (1988–1992), फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच, एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली, अवस. 1

शर्मा आर. के. (2015), सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम, राधा प्रकाशन मन्दिर

माथुर शारदा (1988) सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृति